पशु हिंसा पाप है

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

किसी भी जीवित प्राणी को मारना, प्रताड़ित करना, अंग छेदन करना, शारीरिक या मानसिक रूप से कष्ट पहुंचाना हिंसा है। दूसरों को दुःख देना या स्वयं को दुःख देना हिंसा है। चौरासी लाख जीव यौनियों में से किसी भी प्राणी को कायिक वाचिक और मानसिक पीड़ा पहुंचाना हिंसा है। नारकीय, तिर्यंच, मनुष्यगति और देवगति में जो प्राणी निवास करते हैं वे सभी जीव चेतन प्राणी हैं। किसी को मारना या प्रताड़ित करना हिंसा है। सभी प्राणी सृष्टि निर्माण में सहायक है। पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, मानव सभी में चेतना है। किसी को भी नष्ट करना हिंसा कहलाता है। सभी प्राणियों में आत्मा समान हैं। शारीरिक विविधता का कारण स्वकृत कर्म है। कर्म के आधार पर शरीर प्राप्त होता है। जब हम किसी को जीवित नहीं कर सकते तो किसी को मारने का भी अधिकार हमारा नहीं है। हत्या महापाप है। पशुओं पर जितने अत्याचार किये जाते हैं वे सब पाप की श्रेणी में आते हैं। पशु मूक प्राणी है उसे भी सुख–दुःख का अनुभव होता है। वह अपने कष्ट को व्यक्त नहीं कर सकता किन्तु उसे भी अच्छे और बुरे की अनुभूति होती है। किसी भी प्राणी का अंग छेदन करना या प्राण वियोजन करना पाप है। जहां तक हो सके पशुओं, पक्षियों, लूले–लंगड़े जीवों की सेवा करनी चाहिए। सेवा कार्य पुण्य का कार्य है। क्षुद्र स्वार्थों के लिए पशुओं और पक्षियों की हत्या करना महापाप है। किसी भी प्रकार का अनैतिक आचरण पशुओं के प्रति नहीं करना चाहिए।

शांति प्राप्त करना मनुष्य के अपने वश में है। यदि मनुष्य प्राणियों के साथ मेल–जोल सद्भावना और समतापूर्वक रहता है तो उसके जीवन में शांति बनी रहती है। शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए सहअस्तित्व की कल्पना आवश्यक है। सह–अस्तित्व का अर्थ है कि जीवन जितना हमे प्रिय है उतना ही अन्य प्राणियों को भी प्रिय है। यदि हम किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप किसी अन्य प्राणी के जीवन में करते है तो उसको दुःख होता है। इसलिए प्रेम से और सद्भावना से किसी भी प्राणी को वश में किया जा सकता है। शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व में मनुष्य को ही केन्द्रीय स्थान मिला है। यह विचारधारा मनुष्य के हितों से संबन्धित है। यह सिद्धांत मुख्यतः इहलोक, बुद्धिवाद और व्यक्तिवाद के साथ मानव जीवन और उसकी अनुभुतियों को महत्व देता है। इस रूप में शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व से अभिप्राय उस दर्शन से रहा है, जिसका केन्द्र व प्रमाण दोनों मनुष्य ही है। शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचायक है। मनुष्य के कल्याण एवं सर्वतोमुखी विकास की दृष्टि से जाति, वर्ग, सम्प्रदाय को अधिक महत्व नही देता। मानवतावाद की मुख्य मान्यता है कि हमारे प्रयत्नों एवं लाभ हानि का प्रधान कार्य क्षेत्र इहलौकिक जीवन है। इस प्रकार मानवतावाद का मुख्य केन्द्र वर्तमान जीवन और उसका उच्चतम निर्माण है। भारत में सभी

वर्गो में शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का समर्थन मिलता है। इसमें मानव व्यक्तित्व और उसके पूर्ण विकास को मानव जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है।

शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की स्थापना के लिए सहिष्णुता, तितिक्षा, करूणा और अपरिग्रह की मान्यता एक अनिवार्य शर्त है। **"परस्परोपग्रहोजीवानाम्"** से लेकर **'जियो और जीने दो'** का सिद्धान्त ही शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व की मुख्य धुरी है, जिसमें मानवतावाद का पर्याप्त पोषण किया गया है। आचार शुद्धि, व्यवहार शुद्धि और विचार शुद्धि के आधार पर मनुष्य बिना किसी अतीन्द्रिय सत्ता के सहयोग से स्वयं को विकसित बना सकता है। दया और करूणा का भाव ही शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के मूल में प्रतिष्ठित है, अतः शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व कोरा दर्शन न होकर जीवन दर्शन है, जो किसी भी जीव के अस्तित्व व गरिमा को स्थापित करता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदना व दया, करुणा का भाव समस्त सृष्टि के जीवधारियों के लिए होता है। अतः अहिंसा इस दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए सबसे अनिवार्य शर्त हैं। धर्म दर्शनों में धर्म के व्यावहारिक स्वरूप को मानव जीवन के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया है इसलिए इन दर्शनों में धर्म के रूप में कर्म को प्रधानता दी गई है। मानव जीवन में उत्पन्न समस्याओं का व्यावहारिक समाधान एवं मनुष्य को ईश्वर तुल्य महत्ता प्रदान की गई है। इन दर्शनों में पारलौकिक उद्देश्य यों की पूर्ति की अपेक्षा सांसारिक हितों की उपेक्षा नहीं की गई है। आध्यात्मिक लक्ष्य को स्वीकार करते हुए भी वर्तमान जीवन को उपेक्षित नहीं माना गया है। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के अनुसार मानव जीवन का उद्देश्य मात्र इतना नहीं है कि वह सत्य का साक्षात्कार करे अपितु सत्य के साक्षात्कार के साथ–साथ उस व्यवहार आचार को भी सतत अपने जीवन में उतारे जिसके आधार पर उसने सत्य बोध प्राप्त किया इसलिए भारत को सभी दर्शनों में तत्व मीमांसा के साथ–साथ आचार–मीमांसा का भी उतना ही महत्व हैं। इस रूप में संसार के सभी प्रमुख प्राचीन धर्म मानवतावाद की भूमिका पर प्रतिष्ठित हैं। मानव के साथ–साथ प्रत्येक प्राणी शांति सौहार्द्र एवं सद्भावना के साथ जीवन निर्वाह कर सके यही उद्देश्य शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का है। आजकल मांस के आयात–निर्यात के लिए पशुओं की हिंसा की जाती है। बड़े–बड़े कत्लखानों में दुधारू पशुओं की हत्या की जा रही है। दूध स्वास्थ्य के लिए लाभवर्धक होता है। यदि दुधारू पशु ही नहीं रहेंगे तो दूध की आपूर्ति कैसे हो सकेगी? अतः पशु हिंसा पर रोग लगनी चाहिए।